GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

संताल परगना क्षेत्र में संताल जनजाति के आगमन का इतिहास

डा० प्रेमलता मुर्मू

असि. प्रोफेसर
इतिहास विभाग
संताल परगाना महिला महाविद्यालय दुमका झारखंड

संताल जनजाति विश्व के विभिन्न भागों में पाए जाते हैं। लेकिन इसकी अधिकतम संख्या भारत में है। यह झारखंड उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, असाम आदि राज्यों में निवास करते हैं।भारत में बहुसंख्यक संताल झारखंड राज्य के संताल परगना क्षेत्र में निवास करते हैं। शायद यही कारण है कि इस क्षेत्र का नाम संताल परगाना पड़ा। संताल जनजाति का आरंभिक इतिहास इनके किस्से, कहानियों गीतों, किंवदंतियां इत्यादि में निहित है। लिखित सामग्री के अभाव में इनके इतिहास के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं मिल पाती है।अंग्रेजों के भारत में आने के पश्चात इन पर कई तरह के लेख लिखे गए। यह लेख इतिहास लेखन के लिए महत्वपूर्ण साबित हुए हैं। संतालों के आरंभिक निवास स्थान के इतिहास को हम निम्न पारंपरिक गीतों द्वारा समझ सकते हैं।

हिहिड़ी-पिपिड़ी रेबोन जानाम लेना,
खोजकमान रेबोन खोज लेना।
हाराता रेबोन हारालेना,
सासाड़ बेड़ा रेबोन जातेना हो।

इस गीत के माध्यम से संताल अपने जन्म स्थान से लेकर निवास स्थान के बारे में बताते हैं ।आरंभ में संताल अपने निश्चित निवास स्थान के लिए घुमंतू जीवन व्यतीत कर रहे थे। सर्वप्रथम 1795 ईस्वी में सर जॉन शोर ने उनके निवास स्थान के बारे में जिक्र किया है।एल ओ स्क्रैप्स रूड ने भीअपना मत दिया है कि संताल क्रमशः अफगानिस्तान एवं चीन प्रांत में निवास करते हुए भारत के उत्तर पश्चिम क्षेत्र में प्रवेश कर पंजाब को अपना निवास स्थान बनाया। दूसरा पक्ष कोलोनल डाल्टन का मानना है कि संताल उत्तरी पूर्वी क्षेत्र से आकर छोटा नागपुर क्षेत्र में बस गए। अपने कथन को पुख्ता बनाने हेतु उन्होंने वहां के जनजातीयों के समान भाषा तथा संस्कृति की बात की है। अंग्रेजों के आने के पश्चात कई भारतीय लेखक, इतिहासकार, मिशनरी पादरी , मानवशास्त्रीयोइत्यादि ने इस जनजाति पर लिखना शुरू किया। डॉक्टर कैंपबेल भी इस संबंध में यह मानते हैं की संताल गंगा की घाटी से होते हुए विंध्य पर्वत की तराई में पहुंचे। तत्पश्चात वे छोटानागपुर आए। संतानों ने अपने प्रवास के दौरान कई बस्तियां हजारीबाग के चाय एवं चंपा परगना में बनाएं । संभवतः यह बस्तियां कालांतर में मुसलमान द्वारा छीन लिए गए।पी.ओ. बोडिग के अनुसार संतालों का इतिहास उनकी संस्कृति में झलकता है। सभी मतों के अध्ययन के पश्चात यह समझा जा सकता है की संभवतया लगभग 600 ईसवी पूर्व में संतल का निवास स्थान छोटा नागपुर था। दूसरी जातियों के शोषण तथा दबाव के वजह से छोटा नागपुर क्षेत्र में काफी अराजकता उत्पन्न हो गई थी। जिसके वजह से वहां के वाशिंदों ने गांव छोड़ने का फैसला कर लिया। इस शोषण के विरोध में मुंडा,उरांव तथा हो जनजातीयों ने मिलकर 1831 ईस्वी में बाहरियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।18 वीं सदी के अंत तक छोटा नागपुर जंगल को साफ कर दिया गया था तथा वहां पर कई लोगों का आगमन शुरू हो गया था जिसके कारण वहां के जमीन पर जनसंख्या का बोझ बढ़ गया तथा जीविका उपार्जन के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ गई थी । छोटानागपुर क्षेत्र से ही इनका विस्तार अलग-अलग जगहों जैसे मिदनापुर सिंहभूम उड़ीसा इत्यादि क्षेत्रों में हुआ।

18 वीं सदी के आसपास संतालों का आव्रजन संताल परगना क्षेत्र में हुआ। सर जॉन शोर ने अपनी आलेख में संतालों को 'सुतार' के नाम से संबोधित किया था। श्री मेंकफरसन ने अपना मत दिया है कि संताल वीरभूम क्षेत्र से आए थे ।यहां पर वे जमींदारों के द्वारा कृषि योग्य भूमि साफ करने हेतु लिए गये थे। मुख्यतः संताल परगना क्षेत्र में उनका आगमन कृषि भूमि के विस्तार के उद्देश्य से ही हुआ था। संताल जंगली भूमि को साफ कर खेती योग्य भूमि बनाने में महारत हासिल थे। इन्होंने खेती योग्य जमीन बनाया तथा उसे पर कई वाणिज्यिक फसल उपजाए। जमींदार ऐसी भूमि को तुरंत कब्जे में लेकर भूमि कर वसूलते थे। ऐसी अवस्था में वे इन जमीन को छोड़ने के लिए बाध्य हो जाते थे ।कभी-कभी पूरा गांव ही विस्थापित हो जाता था। उपरोक्त कथन के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि 19वीं सदी के प्रथम दशक में संताल लकड़दीवानी क्षेत्र में प्रवेश किए। सन 1810 ई के अंत में फ्रांसिस बुकानन जब राजमहल की यात्रा पर थे तब उन्होंने अपने अनुभव को साझा करते हुए लिखा है कि जब उसने मांगुरिया पहाड़ जो की राजमहल श्रृंखलाओं का एक भाग को पार किया और आगे के चट्टानी प्रदेश के बीच से निकलकर संताल गांव में पहुंचा। संताल इस इलाके में 1800 ई के आसपास आए थे। उन्होंने वहां रहने वाले पहाड़ी जनजातियों को नीचे के ढलानों पर भगा दिया तथा जंगलों का सफाया कर वहां बस गये। पहाड़ियों लोग खेती करने के लिए हल को हाथ लगाने के लिए तैयार नहीं थे।इन सब के विपरीत संताल आदर्श किसान साबित हुए ।क्योंकि उन्हें जंगल का सफाया करने में कोई हिचक नहीं थी और वे भूमि को पूरी ताकत लगा कर जोतते थे।1818 ई तक संताल अपना रास्ता उत्तर की तरफ बनाते हुए गोड्डा की पहाड़ियों के बीच अपनी बस्तियां स्थापित की। श्री सदरलैंड ने कुछ क्षेत्र जैसे तप्पास,धामसीन,जमनी हरनीपुर आदि जगहों में संताल गांवों को देखा था। श्री वाड ने संतालों को सिंधु तथा धालभूम क्षेत्र में निवास करते पाया था ।जहां से जमींदारों के द्वारा कृषि का हवाला देकर संताल परगना क्षेत्र में उन्हें बसाया गया। 1820 ईस्वी में हैमिल्टन के लेख से यह जानकारी प्राप्त होती है कि संताल इस क्षेत्र से विस्थापित क्यों हुए थे? इसका मुख्य कारण यह था कि ब्रिटिश सरकार द्वारा 1793 ईस्वी में स्थाई बंदोबस्ती लागू कर ज्यादा से ज्यादा राजस्व वसूली करनी थी। संताल किसानों के द्वारा खेती करवाते एवं उनसे लगान वसूल करते थे। संतालों को जमीन देकर राजमहल की तलहटी में बसने के लिए तैयार कर लिया गया। 1832 ई तक जमीन के एक बड़े इलाके को दामिन-ई-कोह के रूप में सम्मिलित कर लिया गया तथा इसे संतालों की भूमि घोषित कर दिया गया। उन्हें इस इलाके के भीतर रहकर खेती करनी थी।संतानों को दी जाने वाली भूमि अनुदान पत्र में यह शर्त थी कि उन्हें भूमि के कम से कम दसवें भाग को साफ करके पहले 10 वर्षों के भीतर जोतना था। इस पूरे क्षेत्र का सर्वेक्षण करके उसका नक्शा तैयार किया गया। इसके चारों ओर परिसीमा निर्धारित कर दी गई। मैदानी इलाके के स्थाई कृषकों की दुनिया से पहाड़िया लोगों को अलग कर दिया गया।

दामिन-ई-कोह के सीमाकंन के बाद संतालों की बस्तियां तेजी से बढ़ी।गांव के संख्या जो 1838 ई. में 40 थी, तेजी से बढ़कर 1851 तक 1473 पहुंच गई। इस अवधि में संतालों की जनसंख्या जो केवल 3000 थी बढ़कर 82000 से भी अधिक हो गई। जैसे-जैसे खेती का विस्तार होते गया वैसे-वैसे अंग्रेजी कंपनी की तिजोरियों में राजस्व की राशि बढ़ती गई।19वीं सदी के संताल पारंपरिक गीतों में उनके लंबे यात्रा का उल्लेख किया गया है कि संताल अपने लिए योग्य स्थान की तलाश में यात्रा करते रहे ।अब दामिन-ए-कोह में आकर मानो उनकी इस यात्रा को विराम लग गया। संताल राजमहल की पहाड़ियों पर बसे तो पहले वहां के मूल पहाड़ियां लोगों ने उनका प्रतिरोध किया पर अंतता वे पहाड़ियों के भीतर चले जाने के लिए मजबूर हो गए।उन्हें निचली पहाड़ियों तथा घाटियों में आने से रोक दिया गया और ऊपरी पहाड़ियों के चट्टानी, अधिक बंजर इलाके तथा भीतरी शुष्क भागों तक उन्हें सीमित कर दिया गया। संतालों ने अपनी पहले वाली खानाबदोश जीवन को छोड़ दिया तथा शांतिपूर्वक एक स्थाई जगह पर निवास कर वाणिज्यिक फसलों की खेती करने लगे थे। वे व्यापारियों तथा साहूकारों के साथ लेनदेन भी करने लगे थे। किंतु संतालों ने जल्दी ही या समझ लिया कि उन्होंने जिस भूमि पर खेती करनी शुरू की थी वह उनके हाथों से निकलती जा रही है। जिस जमीन को साफ करके खेती शुरू की थी उस पर सरकार भारी कर लग रही थी। साहूकार ऊंची दर पर ब्याज लगा रहे थे और कर्ज अदा नहीं किए जाने की स्थिति में जमीन पर कब्जा कर रहे थे। परिणाम स्वरूप संतालों द्वारा 1855 56 ईस्वी में संताल हूल अर्थात विद्रोह किया गया। यह विद्रोह करीब दो वर्षों तक चला और 1857 में समाप्त हो गई। विद्रोह के पश्चात संताल परगना को अलग जिला बनाया गया तथा इस नन रेगुलेशन क्षेत्र का दर्जा दिया गया।

https://www.gapbhasha.org/

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट होता है की संताल जनजाति निरंतर अपने स्थाई निवास हेतु एक जगह से दूसरे जगह यात्रा करते रहे ।आखिर में उनकी यात्रा संथाल परगना क्षेत्र में आकर थम गई । उनके प्रवासी जीवन को यहां स्थायित्व प्राप्त हुआ ।इस प्रकार प्रकृतिवश संताल परिश्रमी होने के कारण देश-विदेश में बस गए लेकिन इनकी अधिकांश संख्या संताल परगना में ही है तथा इससे वे अपनी भाषा में 'सोना दिसोम' कहते हैं।

https://www.gapbhasha.org/